P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-3* June - 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

संदेशों का इतिहास : पंछी से ट्विटर तक

History of Messages: From Birds to Twitter

Paper Submission: 15/06/2020, Date of Acceptance: 22/06/2020, Date of Publication: 23/06/2020

अजय कुमार
सहायक प्रोफेसर,
राजनीतिक विज्ञान विभाग,
रामानुजन कॉलेज,
नई दिल्ली, भारत

सारांश

यह लेख मानव सभ्यता के विकास को तकनीकी विकास के पहलुओं के साथ जोड़कर प्रस्तुत करने की कोशिश करता है तथा मानव समाज पर तकनीकी के प्रभाव को भी व्यक्त करता है जिसमें आज का व्यक्ति इतना रच–बस गया है कि पता ही नहीं चल पा रहा है कि तकनीकी व्यक्ति के वश में है या व्यक्ति तकनीकी का वश में है। इस लेख का निष्कर्ष यह प्रस्तुत करने की कोशिश करता है कि मानव समाज ने एक दूसरे के संपर्क में आने के लिए जिन तकनीकी साधनों को अपनाया वे आज व्यक्ति को सम्पूर्ण विश्व से जोड़ने की क्षमता रखते हैं। इस प्रकार यह लेख संपर्क साधने की कला किस प्रकार एक क्रांति बन गयी, उसका उल्लेख करता है।

This article tries to present the development of human civilization by associating it with the aspects of technological development and also expresses the impact of technology on human society in which today's person has become so settled that it is not known. Whether the technology is under the control of the person or the person is in the control of the technology. The conclusion of this article tries to present that the technological means that human society adopted to get in touch with each other today have the ability to connect the person with the whole world. Thus, this article mentions how the art of connectivity became a revolution.

मुख्य शब्द : वार्तालाप, तकनीकी, इतिहास, संदेश, नेटवर्क, लोकेशन मैप, अखबार, टेलीग्राफ, फोनोग्राफ, सेटेलाइट रेडियो, वीडियो–फोन, सोशल मीडिया।

Conversation, technical, history, messaging, network, location map, newspaper, telegraph, phonograph, satellite radio, video-phone, social media.

प्रस्तावना

संदेशों का इतिहास लगभग उतना ही पुराना है जितना कि मानव का इतिहास। मानव समाज के उद्भव के साथ उसकी भाषा का चलन भी चला और भाषा के चलन के साथ एक–दूसरे को वार्तालाप के जरिए अपना संदेश पहुंचाने का चलन भी चला। सभ्यता के विकास के साथ लोगों ने आपस में बातें करना सीखा फिर उसके बाद जब राष्ट्र राज्य बनने लगे तो लोगों ने दूर रहकर भी एक दूसरे को संदेश पहुंचाना नहीं छोड़ा। उन्होंने अपनी बुद्धि के साथ कई प्रयोग किए और अपने संदेशों को दूसरे गुटों तक या यूं कहें की दूसरे खेमों तक पहुंचाने के लिए न जाने कितने ही प्रयोग किए हैं। उन प्रयोगों का अपना एक इतिहास है। इतिहास को जब हम नजर घुमाकर देखते हैं तो पता चलता है कि आज का मानव स्मार्टफोन का प्रयोग कर रहा है, फेसबुक का प्रयोग कर रहा है यहां तक कि ट्विटर का प्रयोग कर रहा है अर्थात संदेशों का चलन तकनीकी के साथ और बेहतर नवीकरणीय प्रयोगों के साथ हमारे सामने मौजूद है। आज विज्ञान और तकनीकी ने पूरे विश्व को बदलकर रख दिया है। हालांकि इसकी खामियाँ ज्यादा हैं, जो एक अलग विषय है। परंतु फिर भी आज एक बात महत्वपूर्ण तौर पर जानी जानी चाहिए कि जिस तरह भाषा का अपना इतिहास है उसी तरह संदेशों का या संचार का अपना एक इतिहास है, जिसे जानना बेहद जरूरी है ताकि हम इसकी खूबियों और खामियों तक पहुंच सकें। यह शोध पत्र ऐसे ही कुछ ऐतिहासिक पन्नों को पलटता है जो यह बताता है की संदेशों का इतिहास क्या रहा है, किस आधार पर रहा है और कौन–कौन से प्रयोग इसके साथ हुए हैं ।

साहित्यावलोकन

मार्शल टी पोय द्वारा लिखित पुस्तक 'ए हिस्ट्री ऑफ कम्यूनकिशेन: मीडिया एंड सोसाइटी फ्रोम द इवोलुशन ऑफ स्पीच टू द इंटरनेट' (2010) जो कि कम्ब्रिज युनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित है, में संचार के साधनों के सम्पूर्ण इतिहास का विवेचन मौजूद है जो ये सोचने पर मजबूर कर देता है कि किस प्रकार इंसान ने आविष्कारों की दुनिया में प्रवेश किया और आज एक–एक आविष्कार में एक नव–आविष्कार जन्म ले रहा है।

जोस वान डिक द्वारा लिखित पुस्तक 'द कल्चर ऑफ कनेक्टिविटी: ए क्रिटिकल हिस्ट्री ऑफ सोशल मीडिया' (2013) जो कि ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित है, में वेब दुनिया कि संस्कृति के बारे में विस्तार से बताया गया है तथा यह सोशल मीडिया के इतिहास की आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक व्याख्या करती है। यह पुस्तक यह सोचने पर बाध्य कर देती है कि किस प्रकार व्यक्ति फेसबुक, ट्विटर, यू–ट्यूब, विकिपीडिया आदि युक्त तकनीकी का गुलाम बन चुका है। रिच लिंग द्वारा लिखित पुस्तक 'द मोबाइल कनेक्शन: द सेल फोन्स इम्पैक्ट ऑन सोसाइटी'(2004) जो कि एल्सेवियर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित है, में मोबाइल टेलीफोन के सम्पूर्ण इतिहास का लेखा–जोखा है यह समाज कि सुरक्षा में मोबाइल फोन के योगदान का उल्लेख करती है तथा समाज के लिए मोबाइल फोन को एक जरूरत के तौर पर दर्शाती है। यही नहीं, यह समाज में किस तरह समन्वय स्थापित करता है और यह समाज के हर वर्ग के लिए किस प्रकार उपयोगी है इस बात का भी खुलासा करती है।

जेनिस फिशर चान कि पुस्तक 'ई–मेल: ए राइट इट वेल गाइड: हाउ तो राइट एंड मैनेज ई–मेल इन वर्कप्लेस' (2008) जो कि ए राइट इट वेल गाइड प्रकाशन द्वारा प्रकाशित है, में एक व्यावसायिक वातावरण में ई–मेल किस प्रकार बेहद जरूरी हो गया है तथा समाज को यह किस प्रकार सुरक्षित करता है यह बताने का प्रयास करती है। यह पुस्तक बताती है कि व्यावसायिक वातावरण में ई–मेल किस प्रकार लिखें तथा इंस्टेंट मैसेजिंग किस प्रकार व्यावसायिक प्रतियोगिता से लड़ने में सक्षम है। यह पुस्तक हमे सोचने पर मजबूर कर देती है कि समाज तथा बाजार में प्रतियोगिता का चलन किस प्रकार ई–मेल द्वारा बढ़ गया है। तथा यह एक क्रांति के तौर पर नजर आ रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. यह लेख यह पता लगाने की कोशिश करता है कि समाज में लोगों ने किस प्रकार संचार के साधनों से अपना नाता जोड़ा।
2. यह लेख यह पता लगाने की कोशिश करता है कि क्या तकनीकी समाज के लिए वास्तव में जरूरी थी या यह समय के बदलाव के साथ–साथ उपयोगी बनती चली गई।
3. यह लेख यह भी पता लगाने कि कोशिश करता है कि संदेशों के प्रतिमान किस प्रकार समय के साथ साथ एवं आविष्कारों के साथ साथ बदले हैं और वर्तमान में यह किस प्रकार समाज पर हावी हो चुके हैं।

प्राचीन काल में संदेश

प्राचीन काल की तरफ देखें, तो पहले एक–दूसरे को संदेश पहुंचाने के लिए ज़्यादातर लोग आग या धुआँ या फिर तुरही बजाकर संदेश देते थे। आग और धुआं दोनों ही व्यक्ति के उस स्थान को बताते थे जहां व्यक्ति को सहायता की जरूरत है, ऐसा तब किया जाता था जब कोई व्यक्ति मुसीबत में हो और उसे सहायता की जरूरत हो, या उसे खोजा जाना हो। तुरही भी तब बजाई जाती थी जब कोई संदेश देना हो या फिर समुदायों/आदिजनों के बीच कोई जलसा या उत्सव हो। धूएँ का प्रयोग तब किया जाता था जब एक समुदाय एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था, ताकि वह स्थान खोजा जा सके, क्योंकि पहले आज की तरह किसी स्थान को खोजने के लिए तकनीकी नक्शे (लोकेशन मैप) मौजूद नहीं थे।[1]

5वीं शताब्दी ईसापूर्व मे आस–पास के गावों–शहरों में सूचना भेजने के लिए, सहायता मांगने के लिए या फिर कोई चिट्ठी–पत्र भेजने के लिए कबूतर (पंछी) का प्रयोग किया जाता था परंतु उसे ये संदेश ले जाने में काफी समय लग जाता था। जबकि आज कोई मेल भेजने मे व्यक्ति को एक मिनट भी नही लगता। कबूतर के साथ संदेश भेजने के लिए उसे उसके घोंसले से दूर ले जाकर पत्र समेत भेजा जाता था। फिर वही कबूतर वापसी संदेश भी लेकर आता था और कार्य पूरा हो जाने के बाद कबूतर फिर अपने घोंसले में आ जाता था। इस कार्य के लिए कबूतरों को अच्छा–खासा प्रशिक्षण दिया जाता था।[2]

कभी कभी पानी या द्रवीय स्रोतों से भी संदेशे भेजे जाते थे। इसके लिए व्यक्ति को किसी ड्रम मे पानी या तेल या कोई अन्य द्रव्य भरकर उसे छलकाते हुए जाना होता था ताकि वह जहां जा रहा है, उन स्रोतो को खोजते हुए उस तक कोई सहायता पहुँच सके, कभी कभी इसके लिए कूट स्रोतों का भी प्रयोग किया जाता था, ग्रीक इतिहास में इस प्रकार के कई उदाहरण भरे पड़े हैं। भारतीय महाकाव्य 'रामायण' में भी सीता के अपहरण के समय सीता द्वारा पुष्पक विमान से अपने गहनों का फेंका जाना भी इसी तरह का उदाहरण है।

तकनीकी का विकास और संदेशों में प्रतिमानिक परिवर्तन

जैसे–जैसे विज्ञान तथा तकनीकी का विकास हुआ लैम्प से सिग्नल देने का चलन भी शुरू हुआ। ऐसा माना जाता है कि 1867 से मशाल द्वारा सिग्नल देने का प्रचलन शुरू हुआ। यह गावों, शहरों, एवं नगरों में या फिर खुले समुद्र में एक जहाज से दूसरे जहाज तक सिग्नल देने का तरीका मात्र था, लेकिन इसके लिए एक कूट कोड का प्रयोग किया जाता था[3], यदि सामने वाला व्यक्ति कूट कोड को समझ गया तो ठीक, वरना ये सिग्नल ज्यादातर कारगर साबित नहीं हो पाते थे। आज भी मिलिट्री और डिफेंस में मशाल या सिग्नल लैंप (लालटैन) का प्रयोग सेना द्वारा किया जाता है। आज भी सिग्नल लैम्प ज़्यादातर हर चौराहे की रेड लाइट पर ट्राफिक सिग्नलों के तौर पर नजर आते हैं जिसमें हर सिग्नल का एक अर्थ होता है। यहाँ तक कि वाहन को दायीं व बायीं

ओर ले जाने के लिए वाहनों में जो लाइटें लगी होती हैं वे भी सिग्नल लैम्प ही हैं।

खबरें या संदेश भेजने का एक माध्यम अखबार या न्यूपेपर भी रहे हैं, लेकिन ये एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से सीधा संपर्क नहीं साधते। हालांकि 1440 में फ्रांस में प्रिंटिंग मशीन का आविष्कार हो चुका था। लेकिन इसे समाचार पत्रों तक पहुँचने में काफी वर्ष लग गए। इसे गुटेनबर्ग प्रैस का नाम दिया गया था जिसने सबसे पहले बाइबिल को प्रकाशित किया था। अखबार 19वीं शताब्दी के अंत में छोटे–छोटे शहरों और कसबों में प्रकाशित होने लगे थे लेकिन 20वीं शताब्दी में साम्राज्य–बनाम–राष्ट्रवाद के कारण इसका प्रचलन दूसरे देशों में भी बढ़ा। आज भी लोग ऑनलाइन या मोबाइल फोन से ज्यादा प्रिंटेड अखबार पढ़ना पसंद करते हैं।

1838 में इलेक्ट्रिकल टेलीग्राफ का भी उद्भव हो गया और 1858 में ये काफी लोकप्रिय हो गया। इस दौरान अमेरिका से यूरोप का संपर्क इसी टेलीग्राफ से साधा गया और अब दूर–दराज के क्षेत्रों तक भी संदेश पहुँचने लगे। यह दूसरे देशों से संपर्क साधने का एक आसान तरीका था। जबकि अन्य देश संपर्क के साधनों में इजाफा करने के लिए कुछ अन्य प्रयोग भी कर रहे थे, जो आगे चलकर सामान्यजनों के काम आते।[4]

1876 से टेलिफोन का प्रचलन शुरू हुआ। अब लोग घरों या दफ्तरों में आराम से बैठकर एक दूसरे से बातें कर सकते थे। टेलिफोन का आविष्कार कब हुआ ये एक विवादास्पद विषय है लेकिन 1840 से 1870 तक न जाने कितने ही टेलिफोनिक आविष्कार हुए, टेलिफोन उन्हीं मे से एक था। 1876 मे अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने टेलीफोन को पेटेंट कराया।[5]

1877 में ध्वनिक फोनोग्राफ (अकूस्टिक फोनोग्राफ) का प्रयोग होने लगा यह थॉमस एडिसन द्वारा विकसित किया गया एक इलैक्ट्रिकल माध्यम था। जिसके द्वारा ध्वनिक संदेश भेजे जाते थे। लेकिन ये तभी संभव था जब दूसरे व्यक्ति के पास भी ध्वनिक फोनोग्राफ हो अन्यथा इसका प्रयोग करना मुश्किल था। ऐसे ध्वनिक संदेशों का उदाहरण 'कोई मिल गया' फिल्म में भी दर्शाया गया है।

1893 में "वायरलेस लाइटनिंग" के प्रयोग के साथ वायरलेस टेलिग्राफी के प्रयोग को निकोलस टेसला ने अंजाम दिया। वायरलेस लाइटनिंग के सिद्धान्त को टेसला ने खुले रूप से वर्णित किया। अब रेडियो तरंगें एक संदेश को दूसरी तरफ ले जाने लगीं। अब ये तरंगे ही सूचना का माध्यम बन गईं। वायरलेस टेलिग्राफ के सहारे कई अन्य आविष्कार होने लगे। 20वीं शताब्दी में ये काफी फैला। ऐसा भी कहा जा सकता है की यदि ये रेडियो तरंगें और वायरलेस टेलिग्राफी न होती तो आज पाये जाने वाले संचार के माध्यमों के बारे में सोचा भी नही जा सकता था। लगभग 1896 में रेडियो आया हालांकि सिग्नलों को इधर से उधर भेजने के लिए रेडियो तरंगों का प्रयोग लगभग 19वीं शताब्दी के शुरुआत में ही होने लगा था। उदाहरण के तौर पर, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1942 में सुभाष चन्द्र बोस ने भी आजाद हिन्द रेडियो स्थापित किया था। जो आज तक इतिहास में दर्ज है। 20वीं शताब्दी के मध्य में रेडियो पर खबरें सुनने का चलन काफी लोकप्रिय हुआ। अब इसके द्वारा पूरा परिवार एक साथ बैठकर खबरें सुन सकता था। आज टू–वे संचार के साधनों के रूप में रेडियो का प्रयोग बड़ा ही कम होता जा रहा है। लेकिन ड्राइवरों एवं जो लोग रेडियो को सुनना पसंद करते हैं ये उनके बीच आज भी प्रचलित है। वाहनों एवं घरों में आजकल सेटेलाइट रेडियो काम कर रहें हैं। उनका एकमात्र उदाहरण है-'एफएम रेडियो'। इसके द्वारा न्यूज, सूचनाएँ, म्यूजिक तथा एडवरटाइजमेंट को बिना किसी रुकावट के आज हम सुन सकते है यह पहले से ही ब्रोडकास्ट एवं प्रचार का बड़ा अच्छा माध्यम रहा है। इन्हीं तरंगों के माध्यम से 1914 में लोग समुद्रपार रहने वाले अपने मित्रों एवं परिवारजनों से संपर्क साधने लगे। पार–महाद्वीपीय टेलीफोन ने सात समंदर पार भी लोगो को संदेश भेजने में मदद की। इसने देशों की आपसी दूरी को काफी कम कर दिया। 1927 तक पहली कमर्शियल रेडियो–टेलीफोन सेवा यूनाइटेड किंग्डम तथा यूनाइटेड स्टेट्स के बीच शुरू हो चुकी थी। जिसने सूचना के आदान—प्रदान में पूरे यूरोप में क्रांति कर दी। 1934 तक सूचनाओं का आदान—प्रदान रेडियो–टेलीविजन द्वारा संभव हो चुका था। जो कि वायरलेस टेलिग्राफी का ही नतीजा था।[6]

1920–1930 के दशक में वीडियो–फोन बाजारों में आ चुके थे लेकिन वे सफल नहीं हो सके। पहला विडिओ–फोन नेटवर्क 1936 में टेलीविजन के माध्यम से सफल हुआ। अब पहली बार न्यूज, प्रोग्रामों, फिल्मों तथा एडवरटाइजमेंट आदि को सूचीबद्ध किया गया तथा उन्हे ब्रोडकास्ट किया गया। 1946 में ऑटोमोबाइल में भी टेलीफोन ने अपनी क्षमता दर्शाई हालांकि 20वीं शताब्दी के अंत तक यह प्रसिद्ध और लोकप्रिय नहीं हुई। आज भी वाहनों के अंदर टेलीफोन का प्रयोग करना बहुत ही सीमित है। लेकिन ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों और कस्बों में बिना वाहनों और संचार की प्रौद्योगिकी प्रगति के भी इसका प्रयोग काफी सीमित है।

1956 तक, पहला ट्रांस–अटलांटिक टेलीफोन केबल अमेरिका और ब्रिटेन के बीच पूरा हुआ टेलिफोन केबल का उपयोग पानी के भीतर देशों को जोड़ने में मदद करने के लिए किया जाता है। ट्रांस–अटलांटिक केबल का उपयोग आज भी किया जाता है, आज तक नेटवर्क को एक दूसरे के संपर्क में रहने की अनुमति देते हजारों अंडरवाटर केबल हैं, जो आज भी विभिन्न देशों को एक ही सूचना नेटवर्क से जोड़े हुए हैं। हालांकि, यह संचार समय के साथ और अधिक वायरलेस होता जा रहा है।

1978 में, नेटवर्क सिस्टम बनाने के लिए फाइबर ऑप्टिक केबल पहली बार लगाए गए थे। इस नेटवर्क केबल ने दूरसंचार को काफी सक्षम बनाया। इस नेटवर्क ने फोन कंपनियों और सेवा प्रदाताओं को बाजार में स्थापित किया। आज भी इंटरनेट की तेज स्पीड के लिए ये फाइबर ओपटिक्स काफी मददगार साबित होती हैं। यहाँ तक की इसने घर बैठे लोगो को भी व्यवसाय प्रदान किया है।[7]

पहला नॉर्थ अमेरीकन विडिओफोन नेटवर्क एटीएंडटी बेल लैब द्वारा 1965 में कार्यालयी तौर पर रिलीज किया गया वैसे यह 1964 में डिज्नीलैंड तथा न्यूयॉर्क वर्ल्ड फेयर में देखने को मिला बाद में यह खबरें पहुँचाने में इतना लोकप्रिय हुआ की यह दुनिया के हर घर में टेलीविजन के रूप में दिखा। 1990 के दशक में पूरी दुनिया में घर परिवारों में ब्लैक एंड व्हाइट टेलीविजन सेट देखने को मिला। अब लोगों को स्थानीय खबरें ही नहीं मिलीं बल्कि वे अंतर्राष्ट्रीय खबरों से भी अवगत होने लगे। अब वे ताजा खबरों के लिए अखबारों या रेडियो पर कम निर्भर रहने लगे लेकिन अखबारों और रेडियो का महत्व फिर भी कम नहीं हुआ था।

आज का टेलीविजन कई मामलों में प्राचीन टेलीविजन से भिन्न है। वर्तमान में लाइट एमीटिंग डायोड पद्धति के साथ हमारे पास एलईडी स्मार्ट टीवी मौजूद है। आज टेलीविजन में एक या दो चैनल नहीं आते बल्कि सैंकड़ों चैनलों की भरमार है। जब टेलीविजन आया था तब सिर्फ उस पर दो से पाँच चैनल तक ही ब्रोडकास्ट हो पाते थे, और वे ही अध्यतन खबरों एवं सूचनाओं के लिए सम्पूर्ण विश्व के लिए पर्याप्त थे। जबकि आज टेलीविजन पर फिल्में, डॉक्युमेंट्री, टेलीविजन शो एवं रियालिटी शो आदि–इत्यादि प्रायोजित होते हैं। वाकई टेलेविजन के उद्भव ने संचार और न्यूज के मामले में मानवीय इतिहास में एक प्रभावशाली छाप छोड़ी है।[8]

आधुनिक से अत्याधुनिक होते संदेश

हालांकि कम्प्युटर सम्पूर्ण 20वीं शताब्दी में विकसित हुए हैं लेकिन कम्प्युटर नेटवर्किंग 1960 के दशक तक भी समाज में नहीं पहुंची थी। प्रथम वाइड एरिया नेटवर्क (डब्लूएएन) 1965 में आया और 1969 में अर्पानेट चार विश्वविध्यालयों से जुड़ा था। जिनके पास भी कम्प्युटर या उससे मिलती–जुलती इलेक्ट्रोनिक डिवाइस थी इसने संचार और संपर्क को प्रयोगकर्ताओं के लिए सुलभ बनाया। कम्प्युटर द्वारा अब कई इलेक्ट्रोनिक बहु–यंत्रों को एक ही समय पर प्रयोग किया जा सकता था। यह मानवीय इतिहास में आज तक का संचार के क्षेत्र में सबसे बड़ा आविष्कार है। कम्प्युटर एवं इंटरनेट तकनीकी ने मिलकर दुनिया के करोड़ों लोगो को आसानी से एक साथ जोड़ दिया है।[9]

इसी मार्ग में आगे चलकर 1973 में एक और यंत्र का आविष्कार हुआ और वह था-सेलुलर फोन । हालांकि यह 1981 तक बाजार में नहीं आया था। जब 1981 में पहला मोबाइल और सेलुलर नेटवर्क कार्यालयी तौर पर स्थापित हुआ यह तभी विकसित किया गया। 1990 के दशक में जब ये फोन प्रसारित हुए तब ये काफी भारी थे तथा लैंड–लाइन फोन के मॉडल पर ही बने हुए थे। ये फोन तब ज्यादातर वही प्रयोग करते थे जो सत्ताधारी/अभिजन थे या फिर जो महंगी चीजें खरीद सकते थे या जो नई तकनीकी के दीवाने थे। लेकिन इन मोबाइल फोनों से संचार का नया पहलू सामने आया, अब कोई व्यक्ति किसी भी व्यक्ति को कहीं से भी फोन कर सकता था क्योकि जो डायल पैड पहले लैंड लाइन में था अब वह चलते फिरते आदमी के हाथ में था। आज कई सेल फोनों को "स्मार्टफोन" का नाम दिया जाता है। इनमें सैकड़ों फीचर्स मौजूद हैं तथा यह एक समय पर सैकड़ों लोगों को एक साथ जोड़ने की एवं उन तक आपका संदेश पहुँचाने की क्षमता रखता है।[10]

इलेक्ट्रोनिक पत्र–वयवहार अर्थात ईमेल 1981 के बाद उपलब्ध हुआ जिसकी तरंगों ने सम्पूर्ण ऑफिसों एवं कॉर्पोरेट वर्ल्ड में क्रांति ला दी। ये संपर्क एवं संचार का एक नया तरीका था, जो मूक था। यह पहले परंपरागत ऑफिसों तथा व्यावसायिक कार्यालयों में ही प्रयोग में लाया जाता था। इसके द्वारा बड़ी ही आसानी से संदेशे साझा किए जाने लगे। नई सूचना तथा विचार लोगों तक बहुत कम समय में पहुँचने लगे। आज ये पद्धति मोबाइल एप्लीकेशनों के साथ बाजार पर अपना प्रभुत्व जमाये हुए है।

जब ईमेल व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक संपर्क के माध्यमों के रूप में प्रचलन में था, उन्हीं दिनों तीव्र संदेश (इंस्टेंट मेसेजिंग) भी काम कर रहा था। उन दिनों जब तीव्र संदेश के विकास के साथ एआइएम तथा 'याहू' तीव्र संदेशवाहकों से भी परिवारजन एवं मित्र आपस में बातें कर रहे थे, बल्कि वे अजनबियों से भी आसानी से संपर्क साधे हुए थे। एक आसान से यूजरनेम तथा पासवर्ड के सहारे लोग इंटरनेट की पहुँच के साथ इस तीव्र संदेश प्रोग्राम में सक्षम बन चुके थे। इसके सहारे लोग जल्द से जल्द अपने मित्रों के साथ बातें (चैट) कर सकते थे, उनके साथ योजनाएँ बना सकते थे तथा नए लोगों से मिल भी सकते थे। आज का सोशल मीडिया भी इस 21वीं शताब्दी में इस तीव्र संदेशी प्रोग्राम की ही बदौलत विध्यमान है।

1990 के अंत में तथा 21वीं सदी की शुरुआत में इंटरनेट की पहुँच लगभग हर घर तक हो गई क्योकि यह उन दिनों काफी सस्ता हुआ करता था और इस इंटरनेट की पहुँच ने हमारे एक दूसरे से संपर्क साधने के तरीके में एक नाटकीय परिवर्तन कर डाला। न्यूज पोर्टलों, ब्लोगों, एवं जांचकीय पत्रकारिता ने इंटरनेट को देखने का आज ढंग ही बदल दिया है। आज करोड़ों की तादाद में लोग विभिन्न यूआरएल द्वारा अपनी साइटों के माध्यम से बहुविध तरीकों से अपने परिवार, मित्रों तथा सहकर्मियों से संपर्क साधे हुए है।

आज सोशल मीडिया भी संचार/वार्तालाप का सबसे बड़ा साधन बन चुका है। सोशल मीडिया लोगों को सामाजिक रूप से एक–दूसरे के साथ संपर्क साधने की स्वीकृति प्रदान करता है। ऑनलाइन समुदाय का सदस्य बनने के साथ ही लोग अपने ढेरों मित्र बना लेते हैं, वे अपने सहपाठियों से भी मिलते हैं, दूर जा चुके परिवारजनों से भी मिल पाते हैं और अपना भविष्य सुधारने के लिए अपने बिजनेस पार्टनर से भी मिल लेते हैं। सोशल मीडिया सचमुच ही व्यक्ति को सामाजिक बनाने का साधन है। बहुविध नेटवर्कों पर अपडेट को साझा करना, उत्पाद या ब्रैंड्स का जगह–जगह प्रचार करना एक आम सी बात हो गयी है। यहाँ तक की सोशल मीडिया से कई देशों में राजनीतिक क्रांतियाँ तक हो चुकी हैं। अब यह सोशल मीडिया का प्रचलन पूरे उफान पर है। आज बहुत

से ऐसे नेटवर्क हैं जिनमे शामिल होना व्यक्तिगत तौर पर और व्यावसायिक तौर पर बिलकुल फ्री (मुफ्त) है।

सोशल मीडिया कई नेटवर्कों को साझा करता है जैसे ट्विटर, फेसबुक, लाइक्डइन, टंबलर, पिंटेरेस्ट, और इन्स्टाग्राम आदि। इन सभी के कारण आज व्यक्ति के बहुत सारे प्रसंशक हैं तथा अनुयायी हैं। ये वे प्लैटफार्म हैं जो व्यक्ति को अपना ओपिनियन (मत) रखने का, अपनी आवाज उठाने का, अपने उत्पाद और सेवाओं को बेचने का मौका देते है यही नहीं, इन नेटवर्कों पर हम आज न्यूज साझा कर सकते हैं, सहायता मांग सकते हैं तथा अपना व्यवसाय भी शुरू कर सकते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में सोशल मीडिया नए व्यवसायों के लिए एक शुरुआती बिन्दु बन गया है। आज इसके सहारे विज्ञापन तथा मार्केटिंग अभियानों की शुरुआत हो चुकी है जिसके लिए किसी विशेषज्ञ की कोई जरूरत नही है। आप इसके सहारे हर उस व्यक्ति से मिल सकते हैं जिनसे आप मिलना चाहते हैं और उन्हें हर प्रकार की सूचना भी साझा कर सकते हैं। आज सोशल मीडिया व्यक्तिगत तौर पर स्वयं की छवि बनाने एवं व्यावसायिक तौर पर अपने बिजनेस की छवि बनाने के लिए एक मुख्य माध्यम बन चुका है।[11]

पिछले कुछ वर्षों से संचार प्रणाली मे स्मार्टफोन टेक्नोलोजी एक बहुत बड़ा बदलाव लेकर आयी है। स्मार्टफोनों को ज्यादातर मोबाइल या सेलुलर यंत्र माना जाता है लेकिन अक्सर ये एक प्रकार के कम्प्युटर की भांति प्रयोग में लाये जाते हैं। आज बाजार में गूगल से लेकर एप्पल तथा एण्ड्रोइड तक न जाने कितने ही इन्फॉर्मेशन ऑपरेटिंग सिस्टम मौजूद हैं। एण्ड्रोइड एवं इन्फॉर्मेशन ऑपरेटिंग सिस्टम स्मार्टफोन आज टच स्क्रीन के तौर पर मौजूद हैं जो प्रयोगकर्ता (यूजर) को ईमेल, पठनीय संदेश (टेक्स्ट मेसेज), किसी भी जगह से सोशल मीडिया के प्रत्युत्तर की सुविधा देने में सहायता प्रदान करता है। ये एक प्रकार से सेटेलाइट सेल फोन हैं जो उपग्रहों के द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी पर एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से जोड़ते हैं। यह जुड़ाव वास्तव में स्मार्टफोन के बिना कभी संभव नहीं हो पाता। इसके द्वारा कई मोबाइल एप्लिकेशनों को डाउनलोड किया जा सकता है। ये सभी एप्लिकेशन भी संचार क्रांति का एक नया रूप हैं, इनका प्रचलन नई पीढ़ी में बड़ी तेजी से और बहुत ज्यादा बढ़ रहा है।[12]

मोबाइल एप्प ज्यादातर अजनबियों, अपने दोस्तों, परिवारजनों आदि से संपर्क साधने के लिए स्मार्टफोन के साथ ही अस्तित्व में आए हैं। आज हजारों मोबाइल एप्प ऐसे हैं जो हमें संगठित होने में, हमें शिक्षा देने में, हमारा धन सुरक्षित करने में, और हमारे व्यवसायों को चलाने में सहायक सिद्ध होते हैं। मोबाइल कम्युनिकेशन एप्प आज कुकुरमुत्तों की तरह से बढ़ रहे हैं और उपभोक्ता इनकी खूब मांग कर रहे हैं। इन सभी एप्प का प्रयोग आप एक अलग अकाउंट में स्वयं को रजिस्टर करके या एक नया अकाउंट बनाकर नए लोगों के साथ जुड़ सकते हैं और जिनको आप जानते हैं वे भी आपके संपर्क में रह सकते हैं। आज आप इनके जरिये अपने प्रियजनों से वीडियो कॉलिंग के द्वारा जुड़ सकते हैं। जिसमें आप उन्हे सुन ही नही सकते बल्कि देख भी सकते हैं। बहुत से वीडियो एप्प आज काफी लोकप्रिय हो रहे हैं जैसे गूगल हैंगआउट, जूम तथा स्काइपे इत्यादि। स्मार्टफोन पर मुफ्त डाउनलोड योग्य मोबाइल एप्प किसी के भी साथ तीव्रता सहित पूरे विश्व से जुड़ने का एक आसान सा माध्यम हैं फिर चाहे आप घर पर काम कर रहे हों या फिर आप स्विट्जरलैंड में छुट्टियाँ बिता रहे हों।

अग्रिम संभावना

यह बताना बड़ा ही मुश्किल है कि टेक्नोलोजी का अगला रूप क्या होगा, क्योकि बहुत से वायरलेस यंत्र तथा पद्धतियाँ बढ़ती ही जा रहीं हैं, रोजाना नए-नए प्रयोग हो रहें हैं, जो विश्व को अंदरूनी तौर पर ही नहीं बाहरी तौर पर भी आपस में जोड़ रहें हैं। यहाँ तक की सेटेलाइट सिग्नलों के माध्यम से हम चाँद पर ही क्या, मंगल गृह तक की यात्रा कर आए हैं। आज आर्टिफिश्यल इंटेलिजेंस के माध्यम से हम एक रोबोटिक युग में जी रहें हैं। इसलिए संदेश या संचार के इतिहास को समझने का मतलब है—यह जानना है कि हम एक प्राणी मात्र से विकसित होते हुए कितना आगे निकाल आए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Refer, 'History of Communication' on History World. Available on http://www.historyworld.net/wrldhis/plaintexthistories.asp?historyid=aa93, accessed on 22 May, 2020.*
2. *John Staughton, 'How Did the Pigeon Post Work?', on Science ABC.com. Posted on 18 Jan 2016, Available on https://www.scienceabc.com/eyeopeners/how-did-the-pigeon-post-work.html, accessed on 22 May, 2020.*
3. *Sterling, Christopher H. (ed.). Military Communications: From Ancient Times to the 21st Century, Santa Barbara, California: ABC-CLIO, Inc. p. 209.*
4. *Refer, Morse Code & the Telegraph, on History.com Staff, Posted on November 9, 2009, available on https://www.history.com/topics/inventions/telegraph, accessed on 23 May, 2020.*
5. *Refer, 'Alexander Graham Bell demonstrates the newly invented telephone', The Telegraph. 13 January 2017.*

6. *Terence P.Moran, Introduction to the History of Communication: Evolutions & Revolutions, Peter Lang Publishing, New York, 2010, pp.228-229.*
7. *Refer, 'Trans-atlantic communications cable', on https://www.wikiwand.com/en/Transatlantic_communications_cable, accessed on 23 May, 2020.*
8. *Shailaja Bajpai , The World Came Home: The history of television in India, The Indian Express, July 24, 2016. And refer also, Mitchell Stephens, History of Television, available on http://www.nyu.edu/classes/stephens/History%20of%20Television%20page.htm, accessed on 23 May, 2020.*
9. *David Hemmendinger, 'Wide area network', Available on https://www.britannica.com/technology/wide-area-network. Accessed on 23 May, 2020.*
10. *Karen Gardner, 'What Is the Role of the Cell Phone in Communication Today?', on https://smallbusiness.chron.com/role-cell-phone-communication-today-31479.html, accessed on 24 May, 2020.*
11. *Lauren Eichmann, 'How Social Media is Changing Communication', Available on https://www.walkersands.com/how-social-media-is-changing-communication/, accessed on 25 May, 2020.*
12. *Casey Phillips, 'Smartphones Revolutionized Society in Less than a Decade', the Chattanooga Times (TNS), Posted on November 20, 2014, Available on https://www.govtech.com/products/How-Smartphones-Revolutionized-Society-in-Less-than-a-Decade.html, accessed on 25May 2020.*